विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, आश्विन पूर्णिमा, 9 अक्टूबर, 2022, वर्ष 52, अंक 4

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च, सङ्घञ्च सरणं गतो।
चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्पञ्ञाय पस्सति॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

– धम्मपदपालि 190-191-192, बुद्धवग्गो.

– जो बुद्ध, धर्म और संघ की शरण गया है, जो चार आर्य सत्यों– दुःख, दुःख की उत्पत्ति, दुःख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य अष्टांगिक मार्ग– को सम्यक प्रज्ञा से देखता है, यही मंगलदायक शरण है, यही उत्तम शरण है। इसी शरण को प्राप्त कर (व्यक्ति) सभी दुःखों से मुक्त होता है।

बाबूभैया को लिखे गये पत्रों के कुछ अंश

सयाजी ऊ बा खिन के दिवंगत होने के बाद भी पूज्य गुरुजी भारत के शिविरों का विवरण बाबू भैया (बड़े भाई श्री बाबूलाल) को लिख कर भेजते रहे, ताकि वे इन शिविरों की जानकारी और विशेषताएं 'अंतर्राष्ट्रीय विपश्यना केंद्र' के अन्य लोगों को बताते रहें और ये बातें लिखित रूप में भी विद्यमान रहें। पचास वर्ष पूर्व लिखे गये निम्नलिखित पत्र से स्पष्ट है कि विपश्यना को आगे बढ़ाने के लिए अनेक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने कितनी सहनशीलता से काम किया और उससे सभी वर्ग के लोगों को अच्छा धर्मलाभ मिला।

– संपादक

मुंबई-शिविर के कुछ विशेष साधक

पड़ाव: बम्बई,
21 अप्रैल 1971

बाबूभैया,

सादर वंदे!

बम्बई का यह शिविर जो कि भारत का 31 वां शिविर है, आज सफलतापूर्वक संपन्न हो रहा है। यह शिविर कई दृष्टिकोणों से सफल रहा। इस शिविर की सफलता द्वारा मैंने अत्यंत पुण्य अर्जित किया है। इस पुण्य अर्जन को मां सयामा सहित बर्मा के सभी आश्रम वासियों को, तुम्हारे सहित परिवार के सभी सदस्यों को, वहां के पूज्य बंधुओं को, यहां पिताजी एवं बड़े भैया सहित परिवार के सभी सदस्यों को तथा Mr. Hover (श्री हॉवर) सहित विश्व भर में फैले हुए पूज्य गुरुदेव के सभी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष शिष्यों को वितरित करते हुए मन हर्ष विभोर हो रहा है।

श्रीमती एवं श्री थियोडोर वेस्टाल इस शिविर के प्रमुख दम्पति रहे। तुम्हें पहले भी लिखा था कि वेस्टाल न्यूयॉर्क की स्टेट यूनिवर्सिटी का संकायाध्यक्ष रहा और अब इस यूनिवर्सिटी द्वारा दिल्ली में संचालित 'एजुकेशन रिसोर्सेज सेंटर' का डाइरेक्टर है। ये दोनों स्टुवर्ट और सुसान (विपश्यना के पुराने साधक दम्पति) के मित्र हैं और इन दोनों में विपश्यना द्वारा आए हुए प्रभूत परिवर्तन को देखकर ही ये प्रभावित हुए। घर में दो-तीन छोटे बच्चे हैं, इसीलिए पहले हवाई जहाज से केवल पत्नी आई और उसके घर लौटने पर दूसरी बार पति आया। ये दोनों एक-एक शिविर में ही इतने प्रभावित हुए कि दोनों ने जून में डलहौजी में लगने वाले शिविर में एक साथ सम्मिलित होने का निर्णय किया। परंतु अब किन्हीं कारणों से डलहौजी का शिविर जून में नहीं लग रहा है और उन्हें इसके पहले स्वदेश लौट जाना है, इसलिए ये बड़े आतुर रहे कि किसी प्रकार एक और शिविर का लाभ तो ले ही लें। इसके बाद में लगने वाले शिविर इनके बहुत अनुकूल नहीं थे इसलिए इसी शिविर में दोनों हवाई जहाज से चले आए। बच्चों को किसी नौकरानी के पास छोड़ आए। सचमुच इनमें धर्म के प्रति अजीब आकर्षण है। दोनों ने काफी मेहनत की। मि. वेस्टाल की प्रगति बहुत आकर्षक रही। धाराप्रवाह के बाद वह भंग की चेतन अवस्था तक पहुँच गया। श्रीमती वेस्टाल भी पिछली बार से तो बहुत आगे बढ़ी, परंतु अपने पति से जरा कम ही रही। संभवतः बच्चों को घर छोड़ आने का खिंचाव अंतर्मन में बना रहा होगा। मि. वेस्टाल इस बात से भी दुःखी है कि वह इतनी देर से धर्म के संपर्क में आया। अब तो वह अपनी सारी शक्ति लोगों की धर्मसेवा करने में लगाना चाहता है। इस विद्या के प्रति श्रद्धा एवं पर्याप्त अनुभव के बिना सिर्फ भावावेश के आधार पर मैं इसे आनापान सिखाने की अनुमति अभी तो नहीं दे सकता। यद्यपि यह बहुत आतुर था और मुझे अत्यंत गंभीर, सज्जन और उच्च कोटि का विद्वान होने के

कारण योग्य पात्र भी लगा, लेकिन सिखाने की अनुमति देना अभी जल्दबाजी होगी। हां! एक कमी तो इसमें भी दिखी, जिसके लिए बार-बार टोकना पड़ा और वह था- चमत्कारों के प्रति इसका झुकाव। यह और इसकी पत्नी निश्चित रूप से सद्धर्म के प्रति स्वानुभूतियों द्वारा ही प्रभावित हुए हैं, लेकिन इसके सिर पर से गुरुडम की बीमारी का भूत उतारने एवं चमत्कारों से पिंड छुड़वाने के लिए मुझे काफी श्रम करना पड़ा। जो भी हो, यह व्यक्ति भविष्य में सद्धर्म का अच्छा सेवक साबित होगा। अभी बहुत आतुर है कि मैं किसी तरह अमेरिका पहुँचूं जो कि फिलहाल मेरे लिए असंभव है।

इसी शिविर में पूना से एक अमेरिकन रिसर्च स्कॉलर डेनियल आया, जिसकी पत्नी पिछले शिविर में बैठ चुकी थी और अब अपनी दूध पीती बच्ची को किसी आया के पास छोड़ कर, अपने पति के साथ पुनः चली आई। इस महिला ने इस बार पहले से अधिक प्रगति की। यद्यपि कुछ एक कठिनाइयां हैं, जिनके लिए ये दोनों जुलाई-अगस्त में फिर एक बार सम्मिलित होने के लिए आतुर हैं। इसी प्रकार एक रिसर्च स्कॉलर की पत्नी लिंडा आई और प्रभावित होकर गई। वह भी इसी प्रकार किसी अगले शिविर में अपने पति को भी साग्रह ले आयेगी ही। इसी तरह एक और अमेरिकन रिसर्च स्कॉलर हार्वे सम्मिलित हुआ और सफल हुआ, तथा एक ग्रीक स्कॉलर किमान सम्मिलित हुआ और लाभान्वित हुआ।

इस शिविर में साउथ अमेरिका के ट्रिनिडाड देश की एक विदुषी महिला मोली सम्मिलित हुई, जो कि वेस्टाल दम्पत्ति की मित्र है और दिल्ली में एक अतिथि प्राध्यापक की हैसियत से पढ़ा रही है। इस युवती की साधना प्रारंभ में बहुत धीमी और निराशाजनक थी, पर सातवें दिन से एकाएक छलांगे लगाई और अनेकों से आगे पहुँच गई। इसी प्रकार ईरान देश के अमेरिकन मूल का एक आर्किटेक्ट रोजर सम्मिलित हुआ, जिसने भारतीय दर्शन एवं अध्यात्म का गहरा अध्ययन किया है। वह भी अपनी सफलताओं से स्वभावतः अभिभूत ही हुआ।

वैसे विभिन्न देशों का प्रतिनिधित्व कर सकने की गिनती में एक व्यक्ति अर्जेंटीना का बैठा और एक व्यक्ति मेक्सिको का। परंतु इन दोनों की ही सामान्य प्रगति हुई।

भारतीयों में 8-10 विद्वानों का एक ऐसा वर्ग सम्मिलित हुआ, जिसमें कुछ डॉक्टर, कुछ इंजीनियर, कुछ व्यापारी और एक गुजराती का अच्छा साहित्यकार है। ये सब के सब अत्यंत प्रभावित हुए। मुझे इनमें से कुछ एक के प्रति कठिनाइयों की आशंका थी, क्योंकि ये हीलर थे अर्थात मंत्रों से रोगियों का इलाज करते थे। फिर भी इनकी बड़ी अच्छी प्रगति हुई और ये सारे के सारे अत्यंत प्रभावित हुए। अब ये सब के सब निश्चय ही '*एहिपस्सिको*' "आओ और स्वयं अनुभव करके देखो" कहने वाले हैं।

तापड़िया की फैक्ट्री के 8-10 मजदूर इस बार भी आए, वे सभी पहले वालों की तरह सफल ही हुए। इनमें से एक की विपश्यना जागने में थोड़ी कठिनाई हुई, जैसे कोई पर्दा पड़ा हो। परंतु उस परत के फटते ही इतना गहरा चैतन्य जागा कि वह भी धर्म से अभिभूत होकर ही गया। इन मजदूर साधकों में जो परिवर्तन आ रहा है उसकी एक सुखद आश्चर्यजनक बात यह रही कि सभी में जो विनम्रता, शालीनता और परिश्रमशीलता आई सो तो आई ही, एक दो मजदूर महिलाओं ने तो फैक्ट्री के मैनेजर के प्रति अपनी आंतरिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा, "आपने हमारे आदमियों को ऐसा क्या कर दिया कि इनका स्वभाव और चरित्र ही बदल गया। ताड़ी पीने की आदत ही छूट गई, गुस्सा छूट गया, गालियां छूट गईं, फिजूलखर्ची छूट गई, और इन सबका सुखद परिणाम हमारे लिए यह हुआ कि हर महीने की उधारी और कर्ज छूट गया।"

इसके अतिरिक्त इस शिविर में यहां के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री संपत सोमानी बैठे, जो कि अनित्य बोध के धाराप्रवाह से अत्यंत प्रभावित हुए हैं और अब '*एहिपस्सिको*' का मंत्र रटने लगे हैं।

इस शिविर की संपूर्ण मंडली सचमुच अच्छी थी।

हां, तो मैं पिछले पत्र में लिखना भूल गया था कि जिस शाम को पिछला शिविर आरंभ हुआ, उसके दूसरे दिन ही पूज्य ताऊ जी श्री द्वारका दास जी का पुण्य दिवस था। अतः यह पिछला शिविर उन्हीं की पुण्य स्मृति में संचालित करते रहा और उन्हें पुण्य वितरण भी किया।

अब इस शिविर के बाद 25 अप्रैल की दोपहर को नागपुर जा रहा हूं। वहां लगभग 40 लोगों ने 5 दिन पूर्व श्रामणेर की दीक्षा ली है। इनके अतिरिक्त कुछ और गृहस्थ भी भाग लेंगे। भदंत आनंद कौसल्यायन जी स्वयं सम्मिलित होंगे, इसकी तो बहुत संभावना नहीं है परन्तु उनके निमंत्रण पर और उनके प्रबंधन एवं देख-रेख में शिविर लग रहा है, यही एक बहुत बड़ी बात है। यह शिविर 25 अप्रैल की शाम को आरंभ होगा और 5 मई को पूरा होगा।

साधारणतया मैं शिविर छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाता। परन्तु इस बार 1 मई को प्रातःकाल नागपुर से वर्धा जाऊंगा और शाम को ही वापस लौट सकूंगा। बोधगया के साधक और विनोबा भावे के सर्वोदय समाज के महामंत्री श्री द्वारको सुंदरानी जी मुझे श्री विनोबा भावे जी से मिलवाने के लिए बहुत आतुर हैं। श्री विनोबा जी ने भी इच्छा प्रकट की है और यह कहा है कि वर्षा ऋतु में एक शिविर वर्धा में अवश्य लगे। सर्वोदय समाज वालों का वार्षिक अधिवेशन नासिक में हो रहा है, जिसमें कि उनके सभी प्रमुख कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। मैं नागपुर से लौटते हुए एक दिन नासिक रुकूंगा। उनका आग्रह है कि मैं 9 मई तक वहीं रुकूं। परन्तु मेरे लिए यह असंभव हैं। मैं कुछ घंटे ही वहां रुककर इनके आवश्यक लोगों से मिलकर बम्बई वापस चला आऊंगा। क्योंकि 8 तारीख को मुझे बम्बई और पूना के बीच लोनावला नामक पर्वतीय नगर में एक शिविर आरंभ करना है। यह शिविर 'शक्तिदल' नामक अखिल भारतीय महिला मंडल की ओर से व्यवस्थित किया जा रहा है। इसकी व्यवस्थापिका महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्यपाल एवं सुप्रसिद्ध कांग्रेस नेता मंगलदास पकवासा की पुत्र-वधू पूर्णिमा पकवासा है, जो कि भारत की महिला समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। ये महिलायें साल में एक बार 20 दिन का शिविर लगाती हैं, जिसमें केवल महिलाएं ही सम्मिलित होती हैं और खेल-कूद, धर्म प्रवचन आदि का कार्यक्रम रहता है। यह 'शक्तिदल' नामक मासिक पत्रिका भी निकालती है।

पिछले शिविर में बम्बई की प्रसिद्ध महिला-सेविका, गांधीवादी वृद्धा चंचल बाई सम्मिलित हुई थी और अत्यंत प्रभावित हुई थी। उसके 'एहिपस्सिको' का ही यह परिणाम लगता है। लोनावला का शिविर 18 मई को समाप्त होगा और मैं 23 मई को अहमदाबाद में बुद्धानुयाइयों के लिए शिविर लगाने जा रहा था। परन्तु इस बीच यहां के सम्पन्न साधकों ने मेरी रुचि देखकर इस बात पर जोर दिया कि बम्बई में भी बुद्धानुयाइयों का एक शिविर लगे, जिसमें सारे खर्च का भार वे वहन

करेंगे। इस निमित्त राजस्थानियों का एक भवन निश्चित करने का प्रयत्न होने लगा और परिणामतः मैंने अहमदाबाद वालों को अपनी तारीखें आगे सरकाने के लिए लिखा और वे मान गए हैं।

अब अहमदाबाद का शिविर 3 से 13 जून को लगेगा और बीच में बम्बई के बुद्धानुयाइयों के लिए एक शिविर का समय बचा लिया जायगा। मैं चाहता हूं कि इन दयनीय व्यक्तियों को, जिन्होंने कि बुद्ध के नाम का सहारा ग्रहण किया है, उन्हें भगवान के धर्म रस का पान कराया ही जाना चाहिए। ये लोग इतने गरीब हैं कि इनके लिए तो दस दिनों तक अपनी रोजी छोड़कर किसी शिविर में आ सकना ही भारी है। शिविर का खर्च वहन करना तो असंभव ही है। गर्मी की छुट्टियों में ही उन्हें किसी स्कूल या कालेज के भवन में बिना किराया दिए शिविर लगवा सकने की सहूलियत मिल सकती है। अतः मई-जून का महीना मैं इनकी सेवा में ही बिताना चाहता हूं। परंतु इस शिविर के संपन्न साधक श्री सोमानी इस बात का आग्रह कर रहे हैं कि मई महीने के अंतिम दस दिन इन गरीबों को न देकर उनकी ओर से आयोजित किए जाने वाले संपन्न व्यक्तियों के समूह को दिया जाना चाहिए। क्योंकि ये लोग भी अपने बच्चों के गर्मियों की छुट्टी का ही लाभ उठाना चाहते हैं। बदले में इन्होंने यह विनीत आग्रह किया है कि वे जून या जुलाई महीने में जब कहूं तब एक सौ बुद्धानुयाइयों के शिविर हेतु स्थान आदि का सारा प्रबंध स्वयं करवा देंगे। कल परसों तापड़िया, अडुकिया एवं चौधरी जो कि अभी तीनों ही शहर से बाहर गए हुए हैं, वे आ जाएंगे तो ही कोई निर्णय करूंगा।

मुझे लगता है कि अब धर्म की आंधी बड़े जोरों से चलेगी और धीरे-धीरे मुझ अकेले से इतना बड़ा दायित्व संभालना मुश्किल हो जायगा। इसलिए ऐसा लगता है कि लोकहित के दृष्टिकोण से हमें सहायक आचार्य तैयार करने ही होंगे, अन्यथा यह गाड़ी कैसे चलेगी? तुम भी यदि वहां से शीघ्र चले आओ तो भी अच्छा हो, जिससे कि मैं पूर्णरूप से पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अपना सारा जीवन धर्म सेवा में लगा सकूं।

तुम्हारा अनुज,

सत्य नारायण गोयन्का

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य

1-2. श्री गौतम गोस्वामी एवं श्रीमती प्रज्ञा गोस्वामी, कच्छ क्षेत्र के लिए समन्वयक क्षेत्रीय आचार्य के रूप में सेवा

आचार्य

1. श्री रमेश जैन, धम्म अजन्ता, औरंगाबाद के केंद्र-आचार्य
2. श्रीमती निर्मला पटेल, धम्म अजन्ता, औरंगाबाद की केंद्र-आचार्या

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mrs. Radhi Raja, Singapore
2. Mrs. FarahNaz Khazanehdry, Iran

नव नियुक्तियां

भिक्षु आचार्य

1. आ. भिक्षु अस्सजि, नेपाल

सहायक आचार्य

1. श्री काशीनाथ अर्के, औरंगाबाद
2. श्री उद्धव भस्मे, सातारा (म.रा.)
3. श्रीमती पारुल गाला, मुंबई
4. श्री गजानन फुलकर, चंद्रपुर
5. श्री जे. सत्यनारायण, सिकंदराबाद
6. श्रीमती अम्बिका श्रेष्ठ, नेपाल
7. डॉ. केशरी बज्राचार्य, नेपाल
8. श्री स्वहित बीर सिंह कंसाकार, नेपाल
9. Miss Yu Ping Chen, Taiwan
10. Miss Yu Hong Jiang, China

बालशिविर शिक्षक: RCCC

1. श्रीमती चैताली बागची, क्षेत्रीय समन्वयक बाल शिविर शिक्षण- पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, पूर्वी भारत के राज्य (सिक्किम को छोड़कर)

बालशिविर शिक्षक

1. श्री नंद लाल शेवकानी, अजमेर
2. Ms Ingrid de Waal, Netherlands
3. Ms Adi Eytan, Israel
4. Mr Assaf Levy, Israel
5. Mr Yarden Dar, Israel

साधकों के प्रश्न और उत्तर

प्रश्नः निश्चितरूप से हम कैसे कह सकते हैं कि बुद्ध ने खोई हुई तकनीक को फिर से खोज निकाला? संभवतः उन्हें यह विद्या सिखायी गयी थी और उन्होंने पूर्व बुद्ध के सामने प्रतिज्ञा ली थी?

गोयनकाजी: बहुत से लोग जो बुद्ध से मिलते हैं, वे प्रेरित हो जाते हैं और चाहते हैं कि वे भी उन्हीं की तरह सम्यक-सम्बुद्ध बन कर अन्य अनेक लोगों को मुक्त करने में सहायक बन जायँ। यह तापस भी ऐसी इच्छा व्यक्त करता है। तत्कालीन सम्यक-सम्बुद्ध उसकी चैतसिक क्षमता की जांच करते हैं कि क्या यह पहले भी अनगिनत कल्पों में ऐसा काम कर चुका है कि यदि इसे अब विपश्यना दी जाय तो यह बहुत जल्द अरहंत बन सकता है। और फिर उसका भविष्य देखते हैं कि क्या आगे भी अपनी पारमी को अनगिनत कल्पों तक विकसित करने में सक्षम है? हां, ऐसा ही है। तब वे व्याख्या सहित भविष्यवाणी करते हैं कि तुम चार असंख्येय, एक लाख कल्प के बाद सिद्धार्थ गौतम के रूप में जन्म लोगे और बुद्ध बनोगे। यद्यपि वह उसी समय अरहंत अवस्था तक पहुँचने में पूर्णतया सक्षम था, लेकिन उसने विपश्यना नहीं ली।

बुद्ध के अंतिम जीवन के समय चारों ओर (अविद्या का) अंधकार था। विपश्यना की प्रशंसा करने वाले शब्द प्राचीन ऋग्वेद में मौजूद थे, लेकिन केवल पाठ के रूप में। अभ्यास खो गया था। अपनी पिछली पारमिताओं के कारण वे गहराई तक गये और उसे खोज निकाला। उन्होंने कहा, "*पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि*" (*महावग्गपाळि-59, महापदानसुत्तं*) "मुझे ऐसे धर्म की अनुभूति हुई जिसे मैंने पहले कभी सुना ही नहीं था"। और बाद में उन्होंने कहा, "*एस पोराणो मग्गो*", "यह प्राचीन मार्ग" है। *(सं.नि. सगाथावग्ग-अट्ठकथा-213, वङ्गीससंयुत्तं)*

उन्होंने एक निष्क्रिय, विस्मृत पथ को फिर से खोज निकाला और बांटा लोगों को।...

(पूज्य गोयन्काजी द्वारा सतिपट्ठान सुत्त की व्याख्या के सातवें दिन के प्रवचन से साभार)

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि धम्मगिरि के लिए निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें: https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए:

https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org

अथवा- https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

अति महत्त्वपूर्ण सूचना

सेंट्रल आईवीआर (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस) संभाषण नंबरः 022-50505051 आवेदक इस नंबर पर अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर (फॉर्म में उल्लिखित नंबर) से अपनी शिविर पंजीकरण स्थिति की जांच करने, रद्द करने, स्थानांतरित करने या किसी भी केंद्र पर बुक किए गए अपने आवेदन की पुष्टि करने के लिए कॉल कर सकते हैं। वे इस सिस्टम के जरिए केंद्र से संपर्क भी कर सकते हैं। यह भारत के सभी विपश्यना केंद्रों के लिए एक केंद्रीय संपर्क नंबर है।

******

गुजरात में एक और विपश्यना केन्द्र 'धम्म अरवल्ली'

अरावली के पहाड़ों की शृंखला वाले 'उत्तर गुजरात' के अरवल्ली जिले (जो राजस्थान से लगा हुआ है) के प्रमुख नगर मोडासा के पास 'धम्म अरवल्ली' (अरावली को गुजराती में अरवल्ली कहते हैं।) नामक नये केन्द्र का निर्माण होने जा रहा है। इसके लिए मोडासा से 6 किमी दूर स्थित साकरिया गांव की सीमा में खेतों के बीच 2 एकड़ भूमि खरीदी गई है। उसके एक तरफ सरकारी वन-विभाग की जमीन है और दूसरी तरफ एक बरसाती नदी है।

इस छोटे से केन्द्र पर 70 साधकों के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रावधान है। निर्माण कार्य के प्रथम चरण में 25 साधकों, आचार्य निवास एवं धर्म सेवकों तथा व्यवस्थापक के लिए निवास एवं कार्यालय बनाने की योजना है। अब तक केन्द्र की सीमा दिवार बनाने का काम हो चुका है। 60 साधकों के लिए छोटे धम्म हॉल का निर्माण किया गया है, जिसमें दैनिक साधना के साथ हर रविवार को सायं 5 से 7 बजे तक सामूहिक साधना के सत्रों का आयोजन होता है, जिसका लाभ अनेक साधक नियमित रूप से ले रहे हैं।

पता: धम्म अरवल्ली विपश्यना केंद्र, गांव- साकरिया, मोडासा, जिला- अरवल्ली, गुजरात-383315, ईमेल: dhammaaravalli23@gmail.com

संपर्क: श्री जयराम सोनी, मो. +91 98254 20827

बैंक विवरण: Dhamma Aravalli Vipassana kendra,
State Bank of India, Malpur Road branch, Modasa,
A/c no: 40726282255, ISFC: SBIN0018085, MIRC: 383002052.
कृपया दान की रसीद प्राप्त करने के लिए दान का विवरण ट्रस्ट को अवश्य भेजें।

******

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. **रविवार** 09 अक्टूबर, 2022 को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि (29 सितंबर) के उपलक्ष्य में।
2. **रविवार**- 15 जनवरी, 2023 पूज्य माताजी की पुण्यतिथि (5 जन.) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि (19 जन.) के उपलक्ष्य में।
3. **रविवार**- 07 मई, 2023 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में।
4. **रविवार**- 02 जुलाई, आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।
5. **रविवार** 01 अक्टूबर को शरद-पूर्णिमा तथा पूज्य गोयन्काजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644 (पूर्वाह्न 11 बजे से सायं 5 बजे तक).** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक)

Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register
Email: oneday@globalpagoda.org सूचनाः कृपया पीने के पानी की बोतल अपने साथ लायें और पगोडा परिसर में उसे भर कर अपने साथ रखें।

'धम्मालय' विश्राम गृहः एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or email- info.dhammalaya@globalpagoda.org

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः
info@globalpagoda.org or pr@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

दुःख नाम आसक्ति का, मूल बात यह जान।
अनासक्ति से दुख मिटें, धर्म मूल पहचान॥

धन वैभव उपभोग सब, भोगे दुःख अजान।
अनासक्ति से भोगते, बने सुखों की खान॥

जिससे मन निर्मल बने, उसमें सब का श्रेय।
निजहित परहित सर्वहित, यही धर्म का ध्येय॥

जितना सुख तू चाहता, उतना ही कर त्याग।
जो चाहे तू सर्व सुख, त्याग सर्व ही त्याग॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

प्रग्या सील समाधि ही, सुद्ध धरम रो सार।
काया वाणी चित्त रा, सुधरै सै ब्योहार॥

बिना सील पालण कर्यां, सुद्ध समाधि न होय।
बिन समाधि प्रग्या नहीं, मुक्ति कठै स्यूं होय?

रगड़ा झगड़ा मँह पड्या, खोया दिन अणमोल।
इब तो पीवां धरम रो, सांति सुधा रस घोळ॥

इण धरती पर धरम री, इमरत बरसा होय।
सैं को मन सीतळ करै, सैं को मंगळ होय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, आश्विन पूर्णिमा, 09 अक्टूबर, 2022

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 24 SEPTEMBER, 2022, DATE OF PUBLICATION: 09 OCTOBER, 2022

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org